संपादकीय

मास भी और मार्ग भी

वसंत ऋतुओं का राजा है और वर्षा ऋतुओं की रानी, परंतु कार्तिक महीना न वसंत का मास है और न वर्षा का, फिर भी इसका माहात्म्य किसी राजा-रानी से परे सर्वाधिक है, क्योंकि यह आध्यात्मिक-धार्मिक दृष्टि से बारहों महीने में सबसे पवित्र व मनोहारी है। न केवल आत्मिक-पारलौकिक स्तर पर, बल्कि प्राकृतिक, भौतिक और इहलौकिक रूप में भी कार्तिक श्रेष्ठतर महीना है, तभी श्रीकृष्ण ने 'मासों में स्वयं को कार्तिक' कहा है। यह स्वयं उनका ही रूप है, उनके मूल रूपाकार विष्णु भगवान के 'निद्रा' से जगने का महीना माना गया है। शुक्ल पक्ष के देवठान एकादशी महीने का यह महत्त्वपूर्ण दिवस है। महीना भर प्रातःकालीन स्नान के बाद पूजा-अर्चना से धरती के सभी मूर्त तीर्थों का पुण्य फल प्राप्त होने की मान्यता है। इस प्रकार यह एक मास नहीं, वरन् मोक्ष का द्वार भी ठहरता है। फिर तो रुके हुए एवं नए आरंभ होने वाले मांगलिक कार्य संपन्न होते हैं। ये मांगलिक कार्य धार्मिक अनुष्ठानपरक भी होते हैं और सांसारिक परिवार-समाजपरक भी।

वसंत एवं वर्षा के उछाह-उत्ताप तथा ग्रीष्म एवं सर्दी की तपन-ठंडक से संपृक्त-असंपृक्त कार्तिक प्राणिमात्र को प्राकृतिक चेतना के अधिक सन्निकट लाता है, आत्मिकता के अधिक निकट खींचता है, मनुष्य होने की गहरी अनुभूति कराता है। शास्त्रों में इसे पुण्य का महीना कहा गया है, वहीं लोक-स्वर भी इसका अनुमोदन करता है - 'कार्तिक हे सखि पुण्य महीना।' इसी माह शिव-पार्वती के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था। चाहे भौतिक सौंदर्य हो या दिव्य देव रूप, सबका प्रकर्ष-उत्कर्ष सुलभ है। इस प्रकार कार्तिक इहलोक और परलोक का सिद्ध-सेतु है। इहलौकिकता-भौतिकता से परे भी मनुष्य कुछ है, उसकी सत्ता किसी अदृश्य से संचालित, नियंत्रित और आच्छादित होती है - यह एहसास कार्तिक में अधिक संभव है। वस्तुतः चर-अचर सभी प्राणियों के लिए यह प्रकृति का मनोरम उपहार है। विदग्ध-बेचैन मानस भी कार्तिक में न केवल संभलता है, अपितु अपेक्षाकृत कम अंतर्व्यथित होता है, निस्सीम निराशा व अवसाद के क्षणों में भी निराश-हताश नहीं होने देता, जीने की ऊर्जा से भरपूर करता है। संसार को दुखमय मानने वाली विचारणाएँ इस समय असत्य प्रतीत होती हैं। नश्वरता और दुखमयता में अनश्वर आनंद संचरित होता है, जीने की सत्प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है।

भाद्रपद के अन्हरिया वाली घनेरी कालिमा की तरह कार्तिक की धवल चांदनी रात अद्वितीय प्रभा बिखेरती है। सूर्य व चंद्र की स्फीत-रमणीय किरणों से शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य उत्फुल्ल होता है। उमंग-उत्साह, प्रसन्नता, परितोष की निर्मिति होती है। शरद पूर्णिमा के बाद कार्तिक पूर्णिमा स्नान यानी देव दिवाली तक के पर्व-त्योहारों यथा धनतेरस, दीवाली, गोवर्द्धन पूजा, भैया दूज, छठ, आँवला नवमी, एकादशी से सात्विक मानस बनाने में मदद मिलती है। इनके अतिरिक्त अहोई अष्टमी, करवा चौथ, गो पूजन, तुलसी पूजा या तुलसी विवाह, बैकुंठ चतुर्दशी आदि भी की धूम मची होती है। प्रातःस्नान, दीपदान, तुलसी पूजा, भोग-निवृत्ति, आत्मसंयम, राजसी व तामसी पदार्थों का निरोध, पूजा-अर्चना की वजह से भौतिक परिदृश्य पारलौकिक अंतर्सूत्रों से जुड़ता ही है। चतुर्दिक अंतर्व्याप्त दिव्य-भव्य वातावरण में चर-अचर और प्रकृति के कण-कण से सामंजस्य बिठाकर चलने का मानस तैयार होता है। कार्तिक में विशेष तौर पर पूजी जाने वाली तुलसी व आँवले की आध्यात्मिक महत्ता है, किंतु लोक में यह परम औषधि भी है। बिना तुलसी के पूजा-अर्चना, प्रसाद, भोज-भोग पूर्ण-शुद्ध नहीं माने जाते - 'छप्पन भोग बत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसा हरि एक न मानी।' शुक्ल एकादशी की रात्रि इसका विवाह शालिग्राम से कराया जाता है - 'धन भाग तुलसा, धन तोरा नाम।' हर बुराई-अशुद्धि से मुक्ति दिलाने वाला उपकारक मंत्र है - 'तुलसी माता तू मुक्ति की दाता।'

खरीफ फसल के कटकर आने का समय है कार्तिक मास। नए अन्न धान, सरसों के घर में आने से किसानी गृहस्थ जीवन में खुशहाली आती है। अन्न हों या साग-सब्जी या फल-फूल, अपने स्वाद और पौष्टिकता में वे बेजोड़ होते हैं। कोई पेड़ लगाना हो, जिसे बरसात में न लगाया जा सका हो, तो उसे कार्तिक में लगाया जाता है, बेशक वर्षा की तरह प्राकृतिक पानी कम मिलता है, पर इस कमी को जमीन की नमी और दोरस दिन की मंद शीतलता पूरी कर देती है। इस प्रकार यह माहौल कृत्रिम रूप में आकर्षक बनाए गए किसी भी सौंदर्य की सीमा से परे अधिक मोहक और नैसर्गिक होता है। लेकिन आधुनिकतम व्यावसायिक दृष्टिबोध एवं भागमभाग की जिंदगी में लोग आनंद तो दूर, इसे ध्यातव्य भी नहीं मान पाते। भले ही कोई नास्तिक महत्त्व न माने, क्योंकि कार्तिक आस्तिकता की ओर उन्मुख करता है, पर केवल भौतिक नजरिए से भी इसकी सर्वतोन्मुखी महिमा अद्वितीय है, जो शरीर, मन और आत्मा के नैसर्गिक रूप-सौंदर्य का बोध कराने का श्रेष्ठ समय है। यों तो पुण्य कार्य के लिए, पूजा-विधान के लिए सारे समय उपयुक्त हैं, पर कार्तिक ज्यादा प्रकृति अनुकूल और आध्यात्मोन्मुख है। इसे यों समझा जा सकता है कि आधुनिक आविष्कारों के कारण प्रकाश की एक से बढ़कर एक तरह की जगमगाहट और सुंदर सजावट होती है, पर सर्वसुलभ सूर्य के प्रकाश व चंद्रमा की शीतल चांदनी के सामने कोई दूर-दूर तक नहीं टिकती। इसी प्रकार कार्तिक मास मानव ही नहीं, प्राणिमात्र के जीवन को अधिक अर्थवत्ता देता है, नैसर्गिक व वास्तविक सरोकारों से जोड़ता है।

गालियों के निहितार्थ

लोक में गालियों के प्रयोग से माहौल को हल्का-फुल्का बनाने और मनोरंजन करने का लोक व्यवहार पहले से सामाजिक स्तर पर मान्य है। मैथिली लोकगीतों का उदाहरण देखने योग्य है, जिसमें स्त्रियों से गाली गीतों के द्वारा पूछा जाता है कि गोदना बाँहों पर तो है, पर दोनों स्तनों पर गायब क्यों है? जाहिर है कि होली गाने वाले अधिकतर पुरुष ही होते हैं -

गोरी कहमा गोदउलू गोदना।
बहियाँ गोदउलीं छतिया गोदउलीं, बाकी रहल दुनु जोबना।
पिया के पलंग पर रोदना।

फिलहाल, यहाँ अप्रासंगिक तो है, पर गोधन त्योहार के मौके पर भी सभी स्वजनों के मरने के लिए शापित किया जाता है। फिर महिलाएँ रेंगनी के काँटों से जीभ को चुभाती हैं। पूरों माहौल हर्षातिरेक से भर जाता है। -

गाँव के गँउवाँ हो कवन राम, उनहू के दइव हर ले जाय।
गाँव के कयथा हो कवन राम, उनहू के दइब हर ले जाय।।
गाँव के सोनरा हो कवन राम, उनहू के दइव हर ले जाय।
गाँव के बाभना हो कवन राम, उनहू के दइव हर ले जाय।।

बारात आगमन के समय भी 'काली बकरी पूँछ बिना, सारे बराती मूँछ बिन' कहकर बारातियों को नामर्द बना दिया जाता है। बारात आने पर 'दुकाव' के वक्त 'सीहणे' के गीत में वर पक्ष पर कटाक्ष होता है - 'हमनै बुलाए पतले पतले, मोटे मोटे आए रे पंसेरे/पंसेरे ढाई सेरे री पंसेरे।' इसी का अन्य रूप 'डट्टे आए री पंसेरे, हमने बुलाए पतले पतले, मोटे मोटे आए रे पंसेरे' है। राजस्थानी गालियों में विवाह के समय अविवाहितों के साथ कुत्ती, बिल्ली आदि का विवाह रचाया जाता है और विवाहितों की पत्नियों का दूसरे के साथ भाग जाना और पर-पुरुष से संबंध दिखाया जाता है -

परबत जी वाली रौ तीखै है लीलाड़ जी
झीणौं काढ़ौ घूंघटौ वैंरा साहा दीखै गाल जी
तीखोड़ै लीलाड़ मांही सोलै लिखिया यार जी
आठै वैंरा रसिया नै सोलै वैंरा यार जी।

मालवी में 'बावरियों छे फलाणी जेलू रो यार, हेलो म्हारी बावरियाँ' की तर्ज पर गाली गाई जाती है। वर पक्ष की ओर से बारात चले जाने पर स्त्रियाँ अनेक प्रकार के स्वाँग करती हैं, हास्यपूर्ण गीत के साथ नाचती-गाती हैं। इसमें अश्लीलता भी रहती है। इसे हरियाणा में 'खोड़ियाँ' कहते हैं -

कजलोटी ए देवर म्हारा बारात गया,
कजलोटी ए देवराणी किस नैं सौंप गया,
कजलोटी ए दादी की चौकी बिठा गया,
कजलोटी ए दादी तै उसकी मनदर गई,
कजलोटी ए गैल्यौं तै कुत्ता फाड़ गया।

बिहार प्रदेश में शादी-विवाह और यज्ञोपवीत के अवसर पर कथा-पूजा और मटकोर होता है। हर गाँव में माटी कोड़ने के लिए नदी, तालाब या सरोवर के किनारे महिलाएँ जाती हैं और उसी माटी का कलश के नीचे रखने तथा लगन का चूल्हा बनाने में इस्तेमाल होता है। इस अवसर पर गाए जाने वाले गाली गीतों में स्त्रियाँ ही स्त्रियों के लिए कहती हैं -

माटी कोरे गेल छिनरो, पार गंगा हे।
गजनवट में चोरवले आयल सोरह गो भतार हे।।
घर के भतार पूछे, कवन-कवन जात हे।
चार गो त जोलहा-धुनिया, चार राजपूत हे।।
चार गो त मुसहर, बड़ मजगूत हे।
भले छिनरो भले, भले कोरे गेल हे।।

विवाह संस्कार के अंत में भतखई-चावल भोजन का रिवाज है। इस समय समधी व परिजनों को महिलाओं द्वारा गालियों से नवाजा जाता है -

समधी भँडुआ के मुँहवा कैसन लगेला।
जैसन बानर के मुँहवा ओएसन लागेला।
जैसन लँगुर के मुँहवा ओएसन लागेला।।
समधी भँडुआ के मोछवा कैसन लागेला।
जैसन बोतुआ के पुछिया ओएसन लागेला।।
समधी भँडुआ के दँतवा कैसन लागेला।
जैसन खुड़पी के नोखवा ओएसन लागेला।।

बारात आने पर भोजन करने के समय कन्या पक्ष की महिलाएँ वर पक्ष खासकर दुल्हा को गाली देते हुए कहती हैं कि बहुत महँगाई का जमाना है, इसलिए थाली में खीर छोड़ने पर अम्मा, बहन आदि को लेकर जुर्माना वसूला जाएगा -

महँगी के जमाना थारी म खीर न छोरब
थाली में खीर जो छोरब हो दुलहा अम्मा लगत जुर्माना।
थाली में खीर जो छोरब हो दुलहा बहिनी लागत जुर्माना।

गाली गीतों में प्रचलित गालियों को उदात्त रूप देकर उनके माध्यम से विद्वेष, विभ्रांति, कलह, लड़ाई का वातावरण बनाने की बजाय सामाजिक सौहार्द, अपनत्व और आत्मीयता स्थापित करने पर जोर है। हँसी-मजाक, व्यंग्य-उपहास को सही समय पर उचित मात्रा में सलीके से व्यक्त किया जाए तो गाली-विष भी अमृत की तरह सद्भावना का कारक बन सकता है, प्रेम-भाईचारे को पुष्ट करने का उपक्रम बन सकता है।